

॥ श्रीगुरु दत्त प्रसन्न ॥

# संगीत बालप्रकाश

अर्थात्

( हारमोनियम प्रकाश. )

1935  
18/1



तृतीय भाग.



संपादक, मुद्रक, और प्रकाशक.

श्रीमान् पंडित विष्णु दिगंबर पल्लुस्कर.

गायनाचार्य, मास्टर ऑफ इंडियन म्युझिक, प्रिन्सिपॉल,

गांधर्व महा विद्यालय—बंबई द्वारा रचित.

सन १९२१.

इस पुस्तकके छापनेका सब अधिकार पुस्तक कर्ताने  
आपने स्वाधीन रखा है.

चतुर्थावृत्ति ] प्रती २००० [ मुल्य १ रुपया.

“गांधर्व महा विद्यालय” प्रेस, सैंडहस्ट रोड-बंबई.



गांधर्व महा विद्यालय म्युझिकल इन्स्ट्रुमेन्ट सप्लआईंग कं० के कारखाने में हारमोनियम, तंबोरा (वीणा), मध्यमादि वीणा (सतार), तबला, मृदंग, तंबोरा बाक्स, दिलरुबा, ताउस, फिडील, सारंगी, सरोद, जलतरंग, ये सब वाद्य तयार होते हैं।

नंबर.	किंमत हारमोनियम.	रूपये.
१.	सिंगल हारमोनियम हातवाला ... ..	३५—७५
२.	डबल ,, ... ..	५०—१००
३.	डबल कॅम्पेनलटयूनका ... ..	१७५—२२५
४.	ट्रीबल ,, ... ..	२५०—३५०
५.	डबलरीड हारमोनियम हात और पेरवाला	१५०—३००
६.	,, पेरवाला ,, कॅम्पेनरीयलटयूनका ... ..	२७५—३५०
७.	ट्रीबल पेरवाला हारमोनियम ... ..	३५०—५००.
	तंबोरा, सतार, दिलरुबा इत्यादि ... ..	३०—१५०
	तंबोरा बाक्स ... ..	१५—६०

मैनेजर:—गांधर्व महा विद्यालय म्यु. इन्स्ट्रुमेन्ट सप्लआईंग कं०  
सैंडहर्स्ट रोड, -बम्बई.



हमारे यहां के लेखनपद्धति (नोटेशन सिस्टम) को  
समजने के लिये संगीत तत्त्वदर्शक को पढ़ना चाहिये।



## प्रस्तावना.

इस संगीत बालप्रकाश तृतीय पुस्तक को प्रथम पुस्तक में कहे हुए अनुसार बनाया है, इस में १९ रागों में बड़े भक्तोंके बनाए हुए भजनों को लिखा है। इस में लिखे हुए भजनों से ईश्वर को भी प्रसन्नता होती है जैसा के श्रीमद्भागवत में लिखा है:—

नाहं वसाभि वैकुण्ठे योगिना हृदये न च ।

मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

इस वास्ते सब से प्रार्थना है कि इन तीनों संगीत बालप्रकाश अथवा हारमोनियम प्रकाश के पुस्तक का क्रम से याद करना ताके अपने को आनंद और ईश्वरका भजन होगा ।

शुभम् ।

भवदीय,

विष्णु दिगंबर पलुस्कर,

# अनुक्रमणिका.

नं०	राग.	भजन.	पृष्ठ.	
१	खमाज	मूकहोई	१	
२	असावरी	कोबयतन	३	
३	तिलंग	दीनानाथ अब	६	
४	देश	तू दयाल	९	
५	आसा	दीननदुख	१२	
६	खमाज	मेरे तो गिरीधर	१४	
७	सिंधोरा	छायालगत्व	धन्य दीन दयाल	१७
८	पहाडी	हरी ना भजे सब	२०	
९	खमाज	ह्याने पार	२२	
१०	काफी	उधोकरमनकी	२४	
११	गारा	अख्यां हरी	२७	
१२	भूपाली	नमामि भक्त	२९	
१३	आसा	ठाकूर तब	३०	
१४	खमाज	जेही सुमीरत	३४	
१५	कालिंगडा	वंदो गुरुपद	३६	
१६	छायालगत्व	भैरवी	बीत गये दीना	३८
१७	विभास	सारेगम	४०	
१८	मारवा	„	४१	
१९	केदारा	„	४३-४४	

॥ श्रीगुरु दत्त प्रसन्न ॥

## राग खमाज.

इस राग में दो निषाद लगते हैं एक शुद्ध दुसरा अतिकोमल बाकीके सब शुद्ध स्वर.

ताल दादरा.

( सोरठा ).

मूक होई बाचाल, पंगु चढे गिरिवर गहन ।

जासु कृपा सुदयाल, द्रवौ सकल कलिमल दहन ॥

तार		स॒स॒	
मध्य	ग॒ ग॒ प॒ स॒ ग॒ म॒ रि॒ ग॒ प॒ ध॒	५	नि॒ ५ प॒
मन्द्र			

सू॒ क॒ हो॒ . . . इ॒ वा॒ . चा॒ . ल॒ . पं॒  
१ ३ १ ३ १

तार			
मध्य	ध॒ प॒ म॒ ग॒ रि॒ रि॒ ग॒ स॒ रि॒ ग॒ ग॒ . ५	५	नि॒
मन्द्र			

गु॒ च॒ ढे॒ . गि॒ रि॒ व॒ र॒ ग॒ ह॒ न॒ . जा॒  
३ १ ३ १

तार	स	सरि	सस
मध्य	नि नि	ध नि	१ निनि
मन्द्र			

सु कृ पा . . . सू द या . . ल  
३ १ ३

तार	स	स
मध्य	नि १ नि ध प . ऋ	ग म प ध नि
मन्द्र		

द्र वौ स क ल क लि म . ल .  
१ ३ १

तार		
मध्य	१ नि ध प म ग	रि ग म प ध १ नि ध प म ग रि स
मन्द्र		

द ह न . . . . .  
३ १ २

( ३ )

## राग आसावरी संपूर्ण.

इस में गंधार, धैवत और निषाद अतिकोमल. आरोह में गंधार निषाद वर्ज.

तीनताल.

कौन यतन बिनती करिये ।

निज आचरण विचारि हारि हिय मानि जानि डारिये ॥

जेहि साधन हरि द्रवहु जानिजन सोहठि परि हरिये ॥

जाते विपति जाल निशिदिन दुख तेहि पथ अनुसरिये ॥

जानत हूं मन बचन कर्म, पर हित कीन्हे तरिये ॥

सो विपरीत देख पर सुख बिन कारण ही जरिये ॥

श्रुतिपुराण सब को मत यह सतसंग सु दृढ धरिये ॥

निज अभिमान मोह ईर्ष्या वश तिन दिन आदारिये ॥

सन्तत सोई प्रिय मोहि सदा जाते भव निधि परिये ॥

कहो अब नाथ कौन बसते संसार शोक हरिये ॥

जब कब निज करुणा स्वभावते, द्रवहु तो निस्तरिये ॥

तुलसीदास विश्वास आन नहिं, कत पच पच मारिये ॥

तार		
मध्य	पुनिधु . निधुपुमपधुमुप	ग रि सु रि सु . ५
मन्द्र		

कौ . . न य त न बि . न . ती क रि ये .  
३ . . २ . . १ . . २



तार		
मध्य	सु सु सु रि ५	गुरिरिरि सु सु.५
मन्द्र	धु धु धु	

नि ज आ च र ण वि चारीहारी हिय  
 ३ २ १ २

तार	सु. ५	सुरिगुरिसु
मध्य	सुरिसुधु	निधु
मन्द्र		

मा नि जा नि ड री धे . . . . .  
 ३ २ १ २

तार			सु
मध्य	धु सु . ५	सु सु पु धु धु धु धु . ५	धु धु
मन्द्र			

जे हि सा ध न ह रि द्र व हु

तार	सुसुसुसु. ५	सुसुसु रि. ५
मध्य	नि	ध ध ध
मन्द्र		

जा . नि ज न      सो ह ठि प रि ह रि  
 २                      ३                      २

तार	सु रि गु रि सु	सु.
मध्य	नि ध पु. ५ म पु	नि
मन्द्र		

धे . . . . . जा ते . वि  
 १                      २                      ३                      २

तार		
मध्य	ध पु गु	गु रि सु रि रि सु सु. ५ सु रि
मन्द्र		

प ति जा . ल नि श दि न दु ख      ते हि  
 १                      २                      ३

तार	सुसुरि.५	सुरिमगुरिसु
मध्य	सु प धु	निधुपु.५
मन्द्र		

प थ अ नु स री ये . . . . .  
 २ १ २

### राग तिलंग ओडव.

इस में रे, और ध, वर्ज, निषाद दो एक अतिकोमल और दूसरा शुद्ध बाकीके सब शुद्ध स्वर. अतिकोमल नि, के वास्ते निशानी होगी.

तीनताल.

—:०:—

दिनानाथ अब बार तुझारी ।

पतित उधारन बिरद जानके बिगरी लेहुँ सवारी ॥

बालपन खेलतही खोयो युवा विषयरत माते ।

वृद्ध भये सुधि प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते ॥

सुत निज ज्योतिय तज्यों भ्रांत तजि तन त्वच भई जु न्यारी ॥

श्रवणन सुनत चरण गति थाकी नयन भयो जल धारी ॥

पलित केश कफ कंठ विरोध्यो कलन परे दिन राती ॥

माया मोह न छांडे तृष्णा ये दोऊ दुख दाती ॥

अब यह व्यथा दूर करिवे को और न समरथ कोई ॥

सूर दास प्रभु करुणा सागर तुम ते हो सो होई ॥

( ७ )

तार	सु
मध्य	१ गु मृ पु ५ नि पु णि ५ णि पु मृ गु मृ पु
मन्द्र	

दी . ना . . . ना . थ अ व वा र तु  
२ ३ २

तार	
मध्य	पु गु मृ गु ५ सु १ सु गु मृ पु णि नि . ५
मन्द्र	णि

ह्या . . . री . पति त उ धा र न  
१ २ ३ २

तार	सु सु सु . ५
मध्य	णि णि णि गु मृ पु ५ नि पु णि
मन्द्र	

बि र द जा न के बि ग री . . ले  
१ २ ३ २

( ८ )

तार	स॒सु	सु	
मध्य		नि ५ नि॒प	१ गु॒मु॒पु॒नि॒नि
मन्द्र			

हुँ स वा . . . री वा . ला . प  
१ २ ३ २

तार		सु॒ सु॒स	सु॒सु . ५
मध्य	नि॒ नि	नि	गु॒मु॒पु
मन्द्र			

न खे ल त ही खो . यो युवावि  
१ २ ३

तार		स॒स	
मध्य	नि॒नि॒नि॒नि	५ नि ५ नि॒प	गु॒मु॒पु
मन्द्र			

ष. य र त मा ते . . . . .  
२ १ २

तार		सु ग सु .
मध्य	स ग म प णि णि	णि णि ५ णि
मन्द्र		

शुद्ध भये सु धि प्र ग टी मो  
३ २ १ २

तार		सुगमपुमगस
मध्य	प . ५ सु ग म प णि णि	णि
मन्द्र	णि	

को दु खि त पु क्क र त ता . . . . . ते .  
३ २ १

### राग देश संपूर्ण.

इस राग में दो निषाद शुद्ध और अतिकोमल बाकीके सब शुद्ध स्वर, अतिकोमल नि, के वास्ते निशानी होगी. आरोह में गंधार धैवत वर्ज.

### ताल दादरा.

तूं दयाल दीनहूं तु दानी हूं भिकारी ।  
 हूं प्रसिद्ध पातकी तूं पाप पूज हारी ॥  
 नाथ तूं अनाथ को अनाथ कौन भोसो ।  
 मो समान आरत नहि आरत हर तो सो ॥  
 ब्रह्म तूं है जीव तूं, ठाकुर हूं चैरो ।  
 तात मात गुरु सखा तूं, सब विध हित मेरो ॥  
 तोहि मोहिं नाबों अनेक, मानिये जो भावै ।  
 ज्यों ल्यों तुलसी कृपाल, चरण शरण पावै ॥

तार		
मध्य	रि ग रि	स स . ऋ रि म म प
मन्द्र		नि
	तू . द या . ल	दी . न हो
	१ ३	१ ३

तार		स स रि	
मध्य	नि . ऋ		य नि . ऋ प ध
मन्द्र			
	तु	दा नी ङं मि	का .
		१ ३	१

तार			स स स
मध्य	म ग रि . ऋ	नि नि नि नि . ऋ	
मन्द्र			
	री . .	हो प्र खि ङ	पा त की
	३	१ ३	१ ३

तार	रि . ॐ		
मध्य	नि	नि ध प प . ॐ	धमगरि . ॐ
मन्द्र			

तू . पा प पुं ज हारी . .  
१ ३ १ २

तार		ससस	सससस . ॐ
मध्य	मपनिनि . ॐ		नि
मन्द्र			

नाथ तू अ नाथ को अ नाथ कौ न  
१ ३ १ ३ १ ३

तार	सरिमगरि . ॐ	सस . ॐ	स
मध्य		निनि	नि
मन्द्र			

मो सो . मो स मान आ र  
१ ३ १ ३ १



तार	सरि रि . ॐ		
मध्य		५ निधपपप . ॐ धम ग रि . ॐ	
मन्द्र			

त न ही  
३

आ र त हर  
१ ३

तो सो . .  
१ ३

## राग आसा

इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं.

### ताल दादरा.

दीनन दुख हरनदेव संतन हितकारी ॥ धृ० ॥  
 अजामील गीधव्याध इनमे कह कौन साथ ।  
 पंचीहूं पद पढात गणिकासी तारी ॥  
 ध्रुव के शिर छत्र देत । प्रल्हाद को उबार लेत ॥  
 भक्त हेत बांधे सेत । लंक पुरी जारी ॥  
 तंदुल देत रीझ जात । सागपात सो अघात ॥  
 गिनत नही झूटे फल । खाटे मीठे खारी ॥  
 गजको जब ग्राह ग्रस्यो । दुःशासन चीर खस्यो ॥  
 सभा बीच कृष्ण कृष्ण । द्रोपदी पुकारी ॥  
 इतने हरी आय गये । बचन न आरूढ भये ।  
 सूर दास द्वारे ठाडो । अन्धरो भिकारी ॥

तार			
मध्य	प म ग रि स . ॐ	रि रिरिसस	रिममपप . ॐ
मन्द्र			

दी न न दु ख      हर न दे व सं त न हि त  
१   ३                    १   ३   १   ३

तार		स स स स स . ॐ	सरिरि
मध्य	प प म ध . ॐ	प ध	ध ध
मन्द्र			

का री . .      अ जा मी ल गी ध व्या ध      इ न मे क ह  
१   ३                    १   ३   १   ३   १   ३

तार	ग रि स स . ॐ	स सरिस . ॐ
मध्य		नि नि ध ध
मन्द्र		

कौ न सां ध .      पं छी ह .      प द प ढा  
१   ३                    १   ३                    १   ३

तार			
मध्य	ध • ॐ ॐ	ध ध प प • ॐ ॐ ॐ □ ॐ ॐ	प प म ध • ॐ □ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
मन्द्र			

त                      ग णि का सी                      ता री . .  
   १                      ३                      १                      ३

### राग खमाज संपूर्ण.

इस में दो निषाद लगते हैं एक शुद्ध और दुसरा अतिकोमल, अतिकोमल निषाद के वास्ते निशानी होगी. बाकी के सब शुद्ध स्वर.

#### ताल दादरा.

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोईरे प्रभू ॥

जाके शिर मोर मुगुट मेरो पति सोई । शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल सोई ॥  
तात मात सुत न भ्रात आपनो न कोई । छांड दई कुलकी कान क्या करेगा कोई ॥  
संतन संग बैठ बैठ, लोक लाज खोई । अब तो बात फैल गई जाने सब कोई ॥  
असवन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई । मीरा प्रभु लगन लगी होनी हो सो होई ॥

तार			
मध्य	स    स    स		
मन्द्र	नि    नि	ध ध ५ नि ५ नि ध प ध	

मे रे तो गि री    ध र    गो    पा    . .    ल  
   १                      ३                      १                      ३

तार			
मध्य	स	स ग ग र र र र र ग म	म ग र र
मन्द्र	ध नि		नि

इ स रा न को ई रे प्र मु . . मे . रे ती  
१ ३ १ ३ १ ३

तार			
मध्य	स स		स ग ग म
मन्द्र	नि ध	नि ध प ध	

गि रि ध र गो पा . . ल जा के शि र  
१ ३ १ ३

तार			
मध्य	प प प प प	ग म ध प	प म ग म ग
मन्द्र			

मो र मु गु ढ मे रो प ति सो . . . ई .  
१ ३ . १ १ ३

तार			
मध्य	सु सु सु सु	ग सु धु प ग सु ग	रि ग रि
मन्द्र			

शं ख च क्र ग दा . . प . झ कं . ठ  
१ ३ १ ३ १

तार			
मध्य	सु सु	सरि ग सु प धु प सु ग रि ग रि सु	
मन्द्र	नि नि		

मा . ल सो . ई . . . . . मे . . रे  
३ १ ३ १

तार			
मध्य	सु सु		
मन्द्र	नि	५ नि धु ५ नि ५ नि धु प धु	

तो गि रि ध र गो पा . . ल  
३ १ ३

## राग सिंधोरा छायालगतव.

ग, अतिकोमल ध, शुद्ध और अतिकोमल नि, शुद्ध और अतिकोमल, अति-  
कोमल ध, और नी, के वास्ते निशानी होगी. बाकी के सब शुद्ध स्वर.

### ताल दादरा.

धन्य दीन दयालु तूं प्रभु धन्य तूं परमेश्वरा ।  
धन्य यह कृपा है तेरी धन्य तूं परमेश्वरा ॥  
धन्य दया दीन पर दाता तूंहि संसारदा ।  
धन्य करुणा सिंधु स्वामी जो की सेनविशारदा ॥

धन्य महिमा अकथ तेरी । अन्त कोई न पावदा ॥ हार के पीछे रह जावें ।  
कथन नु जो धांवदा ॥ जीव सब संसार दे । गिननी न आखी जांवदी ॥  
अन्न पानी दान करदा । होर सब मन भांवदी ॥ तेरी महिमा तू ही जाने ।  
होर तै बड आईयां ॥ शुद्ध जंतु आखे सोई । मन विषे जो आईयां ॥  
औखी वाट पहाडदी । क्यौ चढ सके पिपीलिका ॥ अन्ध चाहे चन्द्र वेखां ।  
मशक गज डीलका ॥ भील बैल न वन सके । पिंगुल उलंघे मेरु क्यौ ॥  
मूक वक्ता होवे नाहीं । रागी क्यौ कर गुंग हो ॥ होये कायर खेत मांगे ।  
रंच ग्रंथ न बावला ॥ कहां क्यौ कर गुण मै तेरे । बुद्धी हीन उतावला ॥  
हाथ जोड नवाये मस्तक । चरण वंदन कीजिये ॥ धन्य प्रभु महिमा तेरी ।  
जिस रटे सुख दीजिये । सब ही पूत कपूत तेरे । अन्त तैनुं लाज है ॥  
नाम धन प्रभु दान कीजे । सोई हमरे काज है ॥

तार			स
मध्य	प प प ध	प ध य नि ध प ग म	प ध य नि
मन्द्र			

ध न्य दी न द . याल तु प्रभु ध न्य तु प  
१ ३ १ ३ १ ३

तार				
मध्य	५नि	ध ५निधप	गगगम	प५धप
मन्द्र				

र मे . श्वरा . धन्ययह कृ पा है  
१ ३ १ ३ १

तार				
मध्य	गग	सरिगमपम	रिगरिस	नि निनि
मन्द्र				

ते री धन्यतुपर . मे . श्वरा . ध न्य द  
३ १ ३ १ ३ १ ३

तार		सससस		स
मध्य	नि		ध ५निधपध	५नि
मन्द्र				

या दी न प ग दा तातू ही सं सा .  
१ ३ १ ३ १

तार			
मध्य	५ निधप . ऋ	ध ५ निधप ५ धप	मप म रि
मन्द्र			

र दा . ध . न्यक रुणा सि . धु स्वा  
३ १ ३ १ ३

तार			
मध्य	ग रि ऋ	स रि ग म प म	रि ग रि स ऋ
मन्द्र			

. मी जो कि से न वि . शा . र दा  
१ ३ १ ३

तार			
मध्य	५ नि ऋ	ध ऋ प ऋ म ऋ	ग ऋ रि ऋ
मन्द्र			

आ . इ . ए . ओ . उ . ऋ . ३



तार		
मध्य	सु रि ग म प म	रि ग रि सु ॐ
मन्द्र		

१ . ३ . . . १ . ३

### राग पहाडी संपूर्ण.

इस में सब शुद्ध स्वर.

ताल केरवा.

हरी ना भजे सब बिती उमरीया ।

मिथ्या जन्म आय वह खोयो नेकुर दिन कहे की खबरीया ॥

नित मतवाद करत जो आनंद, नहि भय यंम कीरे नगरीया ।

तजि छल छिद्र सर्वजन चेत हूं, गह हूं प्रभु पद की गडरिया ॥

तार		
मध्य	० गु गु ५ सु रि गु गु रि . ॐ	सु
मन्द्र		नि ध ष

ह . री . न . . भ . . जे . सब  
१ . २ . . १ . २

( २१ )

तार			
मध्य	० ग० म० ग०	ग० रि० सु० रि० ग०	० पु० पु० पु०
मन्द्र			

. बि ति उ म री या . . . बि ति उ  
१ २ १ २ १ २

तार			
मध्य	प० पु० पु० धु० नि० धु०	० म० म० ग०	ग० रि० सु० रि० ग०
मन्द्र			

म री या . . . बि ति उ म . रिया . .  
१ २ १ २ १ २

तार					
मध्य	० ग० प०	प० ध०	० ध० ध०	पु० धु० नि० धु० पु०	० म० ग० ग०
मन्द्र					

. मि थ्या ज्जन्म आ . य व ह खो . . . यो . ने कु र  
१ २ १ २ १ २ १ २ १ २

तार			
मध्य	गुगुगुगुरि	गुरिसु०सु	सुरिसुरिगु ५५
मन्द्र			नि

हि न क है . की . . ख व री . या . .  
 १ २            १ २            १            २

### राग खमाज.

इस राग में दो निषाद लगते हैं एक शुद्ध और दूसरा अतिकोमल अतिकोमल नहीं, के वास्ते निशानी होगी वाकीके शुद्ध स्वर.

### ताल धुमाली.

झाने पार उतारोजी थाने निज भक्तनकी आन ।  
 हमरे संकट नेकन धितवो अपनोही करजान ॥  
 काम क्रोध मद लोभ मोह वश भूल्यो पद निर्वान ॥  
 अब तो शरण गही चर्णन कि मत दिजो मोहिजान ॥  
 लख चौरासी भटकत भटकत नेक न परि पैछान ॥  
 भव सागर में बहो जात हौ राखिये श्याम सुजान ॥  
 हौ तो कुटिल अधम अपराधी नहीं सिमरधो तेरो नाम ॥  
 नरसी के प्रभु अधम उधारन गावत वेद पुराण ॥

तार	स	रि	सु
मध्य	० धु	नि	धु प मु गु रि सु स
मन्द्र			

. झाने            . .            र उ ता . . .            रो  
 ३ २            २ ३            २

तार		
मध्य	रिगमुपधुपमग०रिमगु०	गु रि सु स
मन्द्र		नि नि

जी . . . . . थाने . नि ज भ क्त न की  
 १ २ ३ ४ १ २ ३ ४

तार		
मध्य	स०सु० ०रिरिम	सपुम०रिपुपु
मन्द्र		

आ . न . ह म रे सं क ट . ने क न  
 १ २ ३ ४ १ २ ३ ४

तार		
मध्य	पुपुपु०मुमुपु	पु०५५निधुपधु५नि
मन्द्र		

चि त वो . आ प नो ही क र जा .  
 १ २ ३ ४ १ २ ३

तार			
मध्य	धु पु मु गुरु	सु सु १	
मन्द्र		नि	

. . . . . न  
२ . . . . . १ . . . . . २

### राग काफी.

इस राग में दो गंधार दो निषाद, अतिकोमल नी, और ग,  
के वास्ते निशानी होगी, बाकीके सब शुद्ध स्वर.

#### तानताल.

उधो करमनकी गति न्यारी ।  
सब नदिया जल भरभर रहिया सागर किस विध खारी ॥  
उज्वल पंख दिये बगुलाको कोयल किस विधकारी ।  
सुंदर नयन दिये बगुलाको बनबन फिरत उजारी ॥  
मूरख मूरख राजे कीने । पांडित फिरत भिखारी ॥  
सूरश्याम मिलनेकी आशा । छिनछिन बीतत भारी ॥

तार			
मध्य	रि ५ गुरु रि रि . ५ गुरु सु रि	पु पु पु पु	
मन्द्र			

उ धो क र . म न की . ग त न्यारी  
३ . . . . . २ . . . . . १ . . . . . २

तार	
मध्य	सु ग म . य म य नि य नि य नि य नि प ध
मन्द्र	

. . . स ब न दि या ज ल  
३ २

तार	स	रिसु	
मध्य	य नि	य नि ध सु ग म . य सु	य नि ध
मन्द्र			

भ र भ र र ही यां सा ग र कि स  
१ २ ३ २

तार								
मध्य	प म	स रि	ग म	प ध	प म	प य	स ध	य नि
मन्द्र								

वि ध खा री . . . . . उ ज्व ल  
१ २ ३

तार	स॒सु	स॒रिसु	रिसु॒रिसु
मध्य	नि॒	ध॒य॒नि॒.य॒य॒नि	
मन्द्र			

पं ख दी ये व गु ला को को य ल कि स  
२ १ २ ३ २

तार		सु	
मध्य	य॒नि॒धु॒.य॒	य॒नि	य॒नि॒धु॒य॒नि॒पु॒धु॒य॒
मन्द्र			

गु ण का री . . . . .  
१ २

तार		
मध्य	य॒गु॒ य॒गु॒ य॒गु॒ रि॒ य॒गु॒ सु॒रि॒	प॒प॒सु॒गु॒ रि॒
मन्द्र		

सुं द र न य न सृ गा को दी . .  
३ २ १

तार	रि रि स्र रि	स्र
मध्य	गुं म् . यं	यं नि धु पु
मन्द्र		

नो बन . बन फिर त उ .  
३ २

तार	स्र रि स्र
मध्य	गुं मु पु धु यं नि यं नि धु पु मु गुं मु यं
मन्द्र	

जा . . . . . री . . . . .  
१ २

### राग गारा.

इस राग में निषाद अतिकोमल, गंधार दो, अतिकोमल और शुद्ध, अतिकोमल गंधार के वास्ते निशानी होगी सब बाकीके शुद्ध स्वर.

#### तीनताल

अख्यां हरी दरशन की प्यासी ।  
देख्यो चाहत कमल नयनको निशिदिन रहत उदासी ॥  
केशर तिलक मोतियन की माला । वृन्दा बन के वासी ॥  
नेह लगाय त्याग गए तृण सम । डार गए गल फांसी ॥  
काहु के मन की कोन जानत, लोगन के मन हांसी ॥  
सूरदास प्रभु तुमरे दरस बिन, लेहों करवट काशी ॥



तार	रि० रि० ५ ग० सु० रि० सु०	स
मध्य	० ध० नि०	नि० ध० सु० सु० ध०
मन्द्र		

अ खि यां ह री द र स न की . प्या . ली  
 २ ३ २ १

तार	१ १ सु० रि० ग० सु० सु० . ५ ग० सु० ग० रि० सु० ग०
मध्य	ध
मन्द्र	

. दे ख्यो . चा ह त क म ल न य न  
 २ ३ २ १ २

तार	सु० . ५ सु० सु० रि० सु०	५ ग० रि०
मध्य	ध० नि० ध० नि०	
मन्द्र		

को नि शि दि नि र ह त उ दा ली  
 ५ २ १

## राग भूपाली.

—:०:—

इस में निषाद मध्यम वर्ज वाक्रीके सब शुद्ध स्वर.

ताल दादरा.

नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ॥

भजामिते पदाम्बुजं । अकामिनां स्वधामदं ॥

निकाम श्याम सुंदर । भवाम्बुनाथ मन्दरम् ॥ प्रफुल्लकंज लोचनं । मदाद-  
दोषमोचनम् ॥ प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभो ऽप्रमेय वैभवं ॥ निपंग चाप  
सायकं । धरो त्रिलोक नायकम् ॥ दिनेश वंश मण्डनं । महेश चाप खण्डनम् ॥  
मुनीन्द्र सन्त रंजनं । सुरारी वृन्द भंजनम् ॥ मनोज वरी वान्दितं । अजादि  
देव सेवितम् ॥ विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दुःख तापहम् ॥ नमामि इन्दिरापति ।  
सुखाकरं सतांगतिं ॥ भजे सशक्ति सानुज । शक्तिपति प्रिजानुजम् ॥  
त्वन्दन्निभ्र मूल ये नरा । भजन्ति हीन मत्सरा ॥ पतन्ति नो भवार्णवे ।  
वितर्क वीचि संकूले ॥ विविक्त वासिनः सदा । भजन्ति मुक्तये मुदा ॥  
निरस्य इन्द्रियादिकं । प्रयान्ति ते गतिं स्वकाम् ॥ त्वमेकमद्भूतं प्रभुं । निरीह-  
मीश्वरं विभुम् ॥ जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरयिमेक केवलम् ॥ भजामि भाव  
वल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभम् ॥ स्वभक्त कल्प पादपं । समस्त सेव्य मन्वहम् ॥  
अनूप रूप भूपतिं । नतोहसुर्विजापतिम् ॥ प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज-  
भाक्ते देहि मे ॥ पठंति ये स्तवम्मिमं । नरादरेण ते पदम् ॥ व्रजंति नात्र  
संशयं । त्वदीय भक्तिसंयुतम् ॥

तार				
मध्य	स	स	रि	ग ध प वपगसरि
मन्द्र	ध	ध		.

न मा मि भ क्त - व त्स लं कृपालु शील

१ ३ १ ३ १ ३

तार		स	स
मध्य	ग॒ रि॒ स॒ ॥ ॥ ॥	ग॒ ग॒ ग॒ प॒ ध॒ ॥	ध॒ प॒ ॥ ॥ ॥ ध॒
मन्द्र			

को म लं  
१ ३

म जा मिते प दां कु जं  
१ ३ १ ३

अ का  
१

तार		
मध्य	ध॒ प॒ ग॒ ग॒ रि॒ ॥ ॥	ग॒ रि॒ स॒ ॥ ॥ ॥
मन्द्र		

मि ना  
३

मै स्व

धा म दं  
१ २

### राग आसा.

—:0:—

इस में सब शुद्ध स्वर लगते हैं.

### ताल दीपचंदि.

ठाकुर तब शरणाई आयो ।

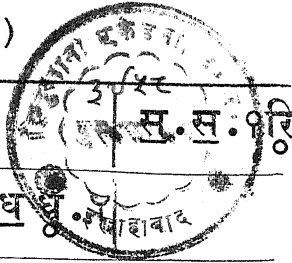
उतैर गया मेरा मनका संशा जब तेरा दरशन पायो ॥

अन बोलत मेरी वृथा जानी अपना नाम जपायो ।

बाह पकड लिन जान अपने गृह अंध कूपते मायो ॥

दुःखनाटे सुखसे हेत समाया । आनंद आनंद गुणगायो ॥

कहो नानक हरीबंधन काटे, द्विजरत आन मिलायो ॥ १ ॥



तार	
मध्य	ध म स म् . ५ प प ध ध्
मन्द्र	

टा . कु र त व श र णा ई . आ  
 १ २ ३ २ १ २ ३

तार	स स	स स स रि सु
मध्य	नि ध प नि	नि ध प . ५
मन्द्र		

. यो . . . उ त र न या . . . मे रा .  
 २ १ २ ३ २

तार	
मध्य	ध ध प स ग् I रि स रि रि स स प प ध ध् . ५
मन्द्र	

म न का . सं . शा . ज व ते रा द र श न  
 १ २ ३ २ १ २ ३ २

तार	सु . ० सुरि गुरिसु	
मध्य		निधुपु . ५ पुपध . ५५
मन्द्र		

पा . . यो . . . . . अ न बो  
 १ २ ३                      २                      १ २

तार	सुसससु . ५ सुरिसु . ५ गुरिस	
मध्य		निधु . ५ ध ध
मन्द्र		

ल त मे री              वृ था .              जा . नी . .              अ प  
 ३ २                      १ २                      ३ २                      १

तार		सुरि सु
मध्य	ध . ० ध . धपु . ५ पुध ध	नि धु
मन्द्र		

ना    ना    म ज    पा . यो . . . . .  
 २    ३    २    १    २    ३    २

तार		स स०सु	रि रिरिसु०५	गुरिस
मध्य	धु धु०५	प०ध		
मन्द्र				

. . वा ह प क ड लीने जन आपने  
 १ २ ३ २ १ २ ३ २

तार							
मध्य	नि धु०५	धु धु धु०५	नि नि धु	नि धु	पु०५		
मन्द्र							

. . प्र ह अंध कृ . . . प ते  
 १ २ ३ २

तार		स रि सु	
मध्य	पु धु धु	नि	धु धु धु पु०५
मन्द्र			

मा . यो . . . . .  
 १ २ ३ . . . २

## राग खमाज.

इसमें दो निषाद लगते हैं, शुद्ध और अतिकेमल अतिकेमल निषाद के, वास्ते निशानी होगी. बाकीके सब शुद्ध स्वर.

### ताल दादरा.

जेहि सुमिरत सिद्धि होय, गण नायक करि वर वदन ।  
करहूं अनुग्रह सोय, बुद्धि राशि शुभ गुण सदन ॥

तार			
मध्य	ग म ~~~~	प प प प प ध ~~~~ ~~~~ ~~~~ ~~~~ ~~~~	प ध य नि ध ~~~~ ~~~~ ~~~~ ~~~~
मन्द्र			

जे ही सु मि र त सिद्धि हो . . .  
३      १      ३      १

तार			
मध्य	ध प म ग म ~~~~ ~~~~ ~~~~ ~~~~	प प प प प ध ~~~~ ~~~~ ~~~~ ~~~~ ~~~~	प ध य नि ध ग ~~~~ ~~~~ ~~~~ ~~~~
मन्द्र			

य जे . . ही सु म र त सिद्धि हो . . या  
३      १      ३      १      ३

तार				
मध्य	ग ग	ग मपधप	गमगगंग मपध	निधप
मन्द्र				

ग ण ना यककरी व र व द न . . . . .  
१ ३ १ ३ १

तार			स.ॐ	स	रि स
मध्य	म ग	निनिनि	नि	नि	नि
मन्द्र					

. . . कर हं आ जु ग्र ह सो . .  
३ १ ३ १

तार			स	
मध्य	निपध.	पगमप	नि	धपमगगम
मन्द्र				

य बुद्धी रा . . शी शु भ गुणसदन .  
३ १ ३ १ ३



तार				
मध्य	प ध	५नि ध	प म ग	॥
मन्द्र				

२

### राग कालिंगडा परज.

इसमें रे, अतिकोमल, दो निषाद एक शुद्ध और अतिकोमल मध्यम दो शुद्ध, और तीव्रतर, तीव्रतर मध्यम और अतिकोमल निषाद के वास्ते निशानी होगी. बाकी के सब शुद्ध स्वर.

ताल धुमाली.

वंदो गुरुपद पद्मपरागा । सुखीच सुवास सरस अनुरागा ॥

अभिय मूरिमय चूरण चारु । शमन सकल भव रुज परिवारु ॥

तार				
मध्य	ग ग म म	म म	१ ग ग म म ग म प ध	ध ध प प प प
मन्द्र				

वंदो गुरु पद . पद्म परागा . . . वंदो गुरु पद

१ २ ३ २ १ २ ३ २ १ २ ३ २

तार			
मध्य	१ ग०ग०ग०ग०ग०ग०	ग०ग०ग०रि०स०स०	स०रि०
मन्द्र			नि०

पद्मपरा गा . . सुरचीसुवासस र स  
१ २ ३ २ १ २ ३ २ १

तार			स०स०स०स०स०स०
मध्य	स०रि०रि०	स०.५	नि०
मन्द्र	नि०नि०		

अनुरा . . गा अमीयसूरिमय . चूर  
२ ३ २ १ २ ३ २ १ २

तार	स०स०स०रि०ग०रि०	रि०स०
मध्य		नि०ध०प०प०प०प०
मन्द्र		

णचार . . . श म न स क ल भ व ह  
३ २ १ २ ३ २ १

तार	
मध्य	५ नि ध्रु पु मु पु ध्रु पु मु गुरि सु
मन्द्र	

ज प री वा . . . ह . . .  
२ ३ २

### राग छायालगत्व भैरवी.

इस में भ, ध और नी, अतिकोमल बाकीके सब शुद्ध स्वर.

ताल केरवा.

बीत गये दीन भजन बिनारे ।

बाले अवस्था खेल गमायो । जब जवानी तब मान कियारे ॥

लाहे कारण मूल गमायो । अजहून भिटि तेरी मनकी तृष्णारे ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो । पार उतर गये सन्त जनारे ॥

तार			
मध्य	१ गमुगुरि	सुरिग	५५ पुम गुरि सस
मन्द्र		नि	

. बीत ग ये दि न . . भ ज न बि ना रे  
१ ३ १ ३ १ ३ १ ३

तार		
मध्य	०गु सु रि गु ५रि सु	सुरिग म प म
मन्द्र		नि.

. बी त ग . ये दी . न . . . . .  
१ ३ १ ३

तार		सुसुसु सु . ५
मध्य	गु सुपम ५गुरि	स सु . ५
मन्द्र		

. भ ज . न वि ना रे वा ले अ व स्था  
१ ३ १ ३ १ ३

तार	सु	
मध्य	नि नि निधुधुप . ५	पुपु पुपु ५पु धु नि
मन्द्र		

खे ल ग . मा . यो . ज ब ज वा . नी त व  
१ ३ १ ३

### राग मारवा.

सा, री, ग, म,

इसमें ष, वर्ज रि, अतिकोमल, म, तीव्रतर, ध, कोमल बाकीके शुद्ध स्वर.  
एक ताल.

तार									
मध्य	रि०गु०म०	धु०म०धु०म०गु०म०गु०गु०रि०गु०रि०	रि०	स					
मन्द्र	नि०							नि०	
	२ २	१ ३ २ ३ २ २	१	३					

तार									
मध्य	स०१	रि०गु०	रि०गु०म०गु०म०धु०म०धु०नि०	धु०म०धु०म०गु०म०					
मन्द्र	नि०								
	२ ३ २	२ १ ३ २ ३ २ २	१ ३ २ ३						

तार									
मध्य	गु०रि०	गु०रि०	रि०सु०	सु०५	धु०म०धु०	गु०म०गु०म०			
मन्द्र		नि०	नि०						
	२ २	१ ३ २ ३	२ २ ३	१ ३					

तार	सु० रि० ग० रि० ग० म० ग० रि०	रि० . ५ म०
मध्य	धु०	नि० ध० रि० . ५
मन्द्र		
	२ ३ २ २ १ ३ २ ३ २	

तार	ग० रि० ग० रि० रि०	
मध्य		नि० नि० ध० नि० ध० म० ध०
मन्द्र		
	२ १ ३ २ ३ २	

तार		
मध्य	म० ग० म०	ग० रि० ग० रि० रि० म० . ५
मन्द्र		नि०
	२ १ ३ २ ३	

### राग केदार.

—:०:—

इसमें गंधार वर्ज, मध्यम द्रौ, निषाद दो, अतिकोमल निषाद और तीव्रतर मध्यम के वास्ते निशानी होगी. बाकीके सब शुद्ध स्वर.

एकताल.

तार		
मध्य	सुसुममपपध५	निधप△मपु△मपुध△मपु.५
मन्द्र		

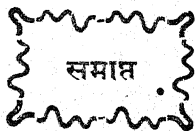
१ ३ ५ ३ २ २ १ ३ २

तार		सुसुरिसु	सुसुरिसुप
मध्य	सुसुपमुरिसु	सुसुपप	निधप
मन्द्र			

३ २ २ १ ३ २ ३ २ २ १ ३ २

तार	सुरिसुरिसु	
मध्य		निधप५△सुपुध△सुपसुमपमुरिसु
मन्द्र		

३ २ २ १ ३ २ ३ २ २



जादा पत्रक.

राग भैरवी छायालगत्व.

इस राग में रे, ग, ध, नि अतिकोमल. दो मध्यम शुद्ध और तीव्रतर, तीव्रतर म के वास्ते निशाणी होगी. (तीनताल.)

तार		
मध्य	सुगुरिस	सुसुध.०धनिनिधु. सुगुमनिधु
मन्द्र	नि	

स र स्वतीशा . र दा विद्या . दा . निदयानी  
३ २ १ २ ३ २

तार		
मध्य	पुगुमरिरिस	सुगुमपुधु पुगुगुमरिरि
मन्द्र	नि	

. दुख ह र नि जग त ज न निज्वा . ला मु खी मा .  
१ २ ३ २ १ २

तार		सुसु	सुसु	सुगु
मध्य	सु	पुधु नि	पुधु नि	निनि
मन्द्र				

ता की जे सु दृष्टी की जे सु दृष्टी से व क जा  
३ २ १ २ ३ २



तार	सुगुरिसु सु सुगुरिसु
मध्य	नि पुधुपुगुगुरिगु
मन्द्र	

न इ त नो अ प नो क र व क्सदी . . .  
 १ २ ३

तार	
मध्य	सुसुपुधुपुसु△सुसुगुसुगुरिसुपुपु
मन्द्र	

. जे ता . न ता . ल कर सु हा ग बु ध  
 २ १ २ ३

तार	सु
मध्य	धुपुपुधुनि निधुपुसुगुरिसुसु
मन्द्र	

आ लं का . . . . . र  
 २ १ २